IJCRM

International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

महिला सशक्तिकरण में शिक्षा और सोशल मीडिया की भूमिकाः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

चांदनी कुमारी [1*], डॉ. कविता कुमारी [2]

[1] शोध छात्रा, विश्वविद्यालय समाजशास्त्र विभाग, भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय मधेपुरा, बिहार, भारत

[2] वरीय सहायक प्राध्यापिका, समाजशास्त्र विभाग, आर. एम कॉलेज सहरसा, भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय बिहार,मधेपुरा, भारत

Corresponding Author: *चांदनी कुमारी

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19710978

सारांश

महिला सशक्तिकरण समाज की प्रगति एवं समृद्धि का महत्वपूर्ण संकेत है। इसमें महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षिक रूप से सशक्त बनाया जाता है। यह केवल एक नारीवादी विचार नहीं, बल्कि समाज की समग्र प्रगति के लिए आवश्यक है। शिक्षा और सोशल मीडिया ने महिलाओं को जागरूक और आत्मनिर्भर बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह अध्ययन भागलपुर जिले में शिक्षा और सोशल मीडिया के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण की प्रक्रिया को समझने का प्रयास करता है। शिक्षा और डिजिटल प्लेटफॉर्म महिलाओं को आत्मनिर्भर और जागरूक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

अध्ययन उद्देश्यः महिलाओं के सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन। सोशल मीडिया के प्रभाव से महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति में बदलाव को समझना। डिजिटल जागरूकता और शिक्षा से महिला सशक्तिकरण की संभावनाओं का आकलन। महिला सशक्तिकरण में आने वाली चुनौतियों की पहचान।

अध्ययन पद्धतिः इस अध्ययन में गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों विधियों का उपयोग किया गया। उत्तरदाता का चुनाव सैंपलिंग विधि से किया गया है। प्राथमिक डेटा के लिए साक्षात्कार, अनुसूची,अवलोकन का सहारा लिया गया, जबकि द्वितीयक स्रोतों में सरकारी रिपोर्ट, एनजीओ के दस्तावेज और पूर्ववर्ती शोध-पत्र शामिल किए गए। प्राप्त डेटा का विश्लेषण सांख्यिकी की पद्धति से किया गया है।निष्कर्ष एवं सुझावःभागलपुर जिले में शिक्षा और सोशल मीडिया ने महिलाओं को सशक्त बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने, साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने और सरकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन की आवश्यकता बनी हुई है। शिक्षा और सोशल मीडिया के संतुलित उपयोग से महिलाओं के समग्र सशक्तिकरण की दिशा में ठोस कदम उठाए जा सकते हैं।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 05-03-2026
- **Accepted:** 16-04-2026
- **Published:** 23-04-2026
- **IJCRM:**5(2); 2026: 802-806
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

कुमारी च., कुमारी क. महिला सशक्तिकरण में शिक्षा और सोशल मीडिया की भूमिकाः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन'. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(2):802-806.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्दः महिला सशक्तिकरण, शिक्षा, सोशल मीडिया, आत्मनिर्भरता, महिलाएं

© 2026 चांदनी कुमारी, डॉ. कविता कुमारी वरीय. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका सदैव से महत्वपूर्ण रही है, किंतु पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं, लिंग आधारित भेदभाव एवं रूढ़िगत सोच के कारण महिलाओं को समान अधिकार और अवसर नहीं मिल सके। बीते कुछ दशकों में महिला सशक्तिकरण का विचार सामाजिक विकास के केन्द्र में आ गया है। सशक्तिकरण का आशय केवल अधिकारों की प्राप्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता, आत्मनिर्भरता, समान भागीदारी और सामाजिक सम्मान का समावेश होता है।

आज के डिजिटल युग में शिक्षा और सोशल मीडिया महिला सशक्तिकरण के दो प्रमुख उपकरण बनकर उभरे हैं। शिक्षा जहाँ महिलाओं को ज्ञान, सोचने-समझने की क्षमता और आत्मविश्वास प्रदान करती है, वहीं सोशल मीडिया उन्हें अपनी बात कहने, विचार साझा करने और सामाजिक मुद्दों पर सक्रिय भागीदारी का मंच प्रदान करता है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं, जो पहले घर की चहारदीवारी तक सीमित थीं, अब शिक्षा और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से समाज की मुख्यधारा में शामिल हो रही हैं। भागलपुर जैसे अर्ध-शहरी जिले में यह प्रक्रिया तेजी से दिखाई देती है। यहाँ की महिलाएं अब न केवल शिक्षित हो रही हैं, बल्कि सोशल मीडिया के जरिए जागरूक भी बन रही हैं। वे अपने अधिकारों, कानूनों और सरकारी योजनाओं की जानकारी प्राप्त कर रही हैं तथा सामाजिक व राजनीतिक गतिविधियों में भाग ले रही हैं।

यह शोध इसी संदर्भ में भागलपुर जिले की महिलाओं के जीवन में शिक्षा और सोशल मीडिया की भूमिका को समझने तथा महिला सशक्तिकरण में इन दोनों कारकों के योगदान का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन महिला सशक्तिकरण की दिशा में संभावनाओं के साथ-साथ चुनौतियों को भी उजागर करने का प्रयास है।

साहित्य समीक्षा

नेहरू, रवीन्द्र (2012)

महिला शिक्षा और सशक्तिकरण" नामक पुस्तक में लेखक ने दर्शाया है कि शिक्षा महिलाओं को न केवल आत्मनिर्भर बनाती है, बल्कि उन्हें सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए सक्षम बनाती है।

2. शर्मा, किरण (2014)

अपने शोध में उन्होंने बताया कि सोशल मीडिया महिलाओं को एक नया मंच प्रदान करता है जहाँ वे अपने विचार साझा कर सकती हैं, सामाजिक मुद्दों पर आवाज उठा सकती हैं और आत्मविश्वास का विकास कर सकती हैं।

3. अली, सादिक (2016)

'डिजिटल प्लेटफॉर्म और ग्रामीण महिलाएं' विषय पर अध्ययन में पाया गया कि सोशल मीडिया ने ग्रामीण महिलाओं को सूचना के नए स्रोत दिए हैं, जिससे उनके जीवन में कई सकारात्मक बदलाव आए हैं।

4. मिश्रा, संगीता (2018

शिक्षा और महिला सशक्तिकरण पर केंद्रित शोध में उन्होंने शिक्षा को महिलाओं के लिए 'सामाजिक बदलाव की चाबी' बताया है, जिससे वे आर्थिक, सामाजिक और पारिवारिक निर्णयों में भागीदारी कर सकती हैं।

5. कुमारी, प्रिया (2019)

अपने शोध 'सोशल मीडियाः नारी चेतना का नया मंच' में कहा कि सोशल मीडिया नेप महिलाओं को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी है, जिससे वे सामाजिक रूढ़ियों के खिलाफ मुखर हो रही हैं।

6. सिंह, अर्चना (2020)

उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि शिक्षित महिलाएं डिजिटल साक्षरता को तेजी से अपना रही हैं और सामाजिक नेटवर्किंग के माध्यम से अपने व्यवसाय व स्वरोजगार को बढ़ावा दे रही हैं।

7. यादव, पायल (2020)

'ग्रामीण महिला सशक्तिकरण में प्ब्ज् की भूमिका' विषय पर अध्ययन में यह पाया गया कि डिजिटल माध्यमों के प्रयोग से महिलाएं सरकारी योजनाओं व अपने अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक हुई हैं।

8. झा, मनोज (2021)

अपने अध्ययन में कहा कि महिला सशक्तिकरण केवल शिक्षा से नहीं, बल्कि डिजिटल सहभागिता से और अधिक प्रभावी होता है। सोशल मीडिया पर महिलाएं सामूहिक रूप से सामाजिक मुद्दों पर संवाद कर रही हैं।

9. चैधरी, सीमा (2022)

'नारी और नया मीडिया' में बताया गया कि सोशल मीडिया महिलाओं के लिए एक ऐसा मंच है जिसने उन्हें सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विषयों पर खुलकर बोलने का अवसर दिया है।

अध्ययन उद्देश्य:

1. महिलाओं के सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन करना।
2. सोशल मीडिया के प्रभाव से महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति में हुए बदलाव को समझना।
3. डिजिटल जागरूकता और शिक्षा से महिला सशक्तिकरण की संभावनाओं का आकलन करना।
4. महिला सशक्तिकरण में आने वाली प्रमुख सामाजिक, सांस्कृतिक एवं तकनीकी चुनौतियों की पहचान करना।

परिकल्पनाएँ

1. शिक्षा महिलाओं को आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनाने में सहायक होती है।
2. सोशल मीडिया के प्रयोग से महिलाओं में और राजनीतिक जागरूकता में वृद्धि होती है।
3. डिजिटल जागरूकता से महिलाओं की आर्थिक भागीदारी और नेतृत्व क्षमता में सकारात्मक परिवर्तन आता है।

© 2026 चांदनी कुमारी, डॉ. कविता कुमारी वरीय. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

4. शिक्षा और सोशल मीडिया का संयुक्त प्रभाव महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया को गति देता है।

अध्याय क्षेत्र

यह अध्ययन बिहार राज्य के भागलपुर जिला को केंद्र में रखकर किया गया है। भागलपुर पूर्वी बिहार का एक प्रमुख जिला है, जिसे ''सिल्क सिटी'' के नाम से जाना जाता है। यह गंगा नदी के तट पर स्थित है और ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध क्षेत्र है। भागलपुर जिले में कुल 16 प्रखंड हैं, जिनमें शहरी और ग्रामीण दोनों प्रकार की बस्तियाँ हैं। यहाँ की जनसंख्या में महिलाओं की भागीदारी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में निरंतर बढ़ रही है, लेकिन अब भी कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं, जैसे शिक्षा का स्तर, डिजिटल साक्षरता की कमी, सामाजिक रूढ़ियाँ आदि।

इस शोध में भागलपुर जिले के कुछ चयनित प्रखंडों और पंचायतों को शामिल किया गया है, जहाँ विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि की महिलाओं से साक्षात्कार, प्रश्नावली और अवलोकन के माध्यम से आंकड़े एकत्र किए गए हैं।

भागलपुर को शोध क्षेत्र के रूप में चुनने का प्रमुख कारण यह है कि यहाँ परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन की स्थिति देखी जाती है। शिक्षा और सोशल मीडिया जैसे उपकरणों का उपयोग बढ़ रहा है, जिससे महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया को सामाजिक परिप्रेक्ष्य में बेहतर ढंग से समझा जा सकता है।

शोध प्रविधि

इस शोध में गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों प्रविधियों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक जानकारी हेतु साक्षात्कार, प्रश्नावली एवं अवलोकन विधियों का प्रयोग किया गया, जबकि द्वितीयक स्रोतों में पुस्तकें, सरकारी रिपोर्ट एवं पूर्ववर्ती शोधों का संदर्भ लिया गया। डेटा का विश्लेषण सांख्यिकीय विधि से किया गया।

नमूनाकरण

इस शोध में सैंपलिंग विधि के अंतर्गत भागलपुर जिले की 150 महिलाओं से जानकारी एकत्र की गई, जिनमें शहरी और ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं शामिल हैं।

तथ्यों का संकलन, वर्गीकरण, विश्लेषण

इस शोध में तथ्यों का संकलन साक्षात्कार, प्रश्नावली और अवलोकन के माध्यम से किया गया। संकलित आंकड़ों का वर्गीकरण विषयानुसार किया गया तथा सांख्यिकीय पद्धतियों द्वारा विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाले गए, जिससे महिला सशक्तिकरण में शिक्षा और सोशल मीडिया की भूमिका स्पष्ट रूप से सामने आ सकी।

तालिका 1: उत्तरदाताओं का शैक्षिक स्तर

शैक्षिक स्तर	उत्तरदाता संख्या	प्रतिशत (%)
प्राथमिक	25	16.7%
माध्यमिक	40	26.7%
उच्च माध्यमिक	35	23.3%
स्नातक	30	20.0%
स्नातकोत्तर	20	13.3%
कुल	150	100%

उपर्युक्त तालिका सं0-01 में उत्तरदाताओं का शैक्षिक स्तर का विवरण दर्शाया गया है। इसमें सर्वाधिक उत्तरदाताओं माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की सं0 40(26-7%) सबसे कम शिक्षा प्राप्त स्नातकोत्तर 20(13.3%) है।

तालिका 2: उत्तरदाताओं की आयु वर्ग

आयु वर्ग	संख्या	प्रतिशत (%)
18–25 वर्ष	35	23.3%
26–35 वर्ष	50	33.3%
36–45 वर्ष	40	26.7%
46 वर्ष से अधिक	25	16.7%
कुल	150	100%

उपर्युक्त तालिका सं0-2 में उत्तरदाताओं के आयु वर्ग को दर्शाया गया है, सर्वाधिक उत्तरदाताओं 26-35 आयु वर्ग के 50(33.3%) एवं सबसे कम 46 से अधिक आयु वर्ग वाले 25(16.7%) है।

तालिका: 3 रोजगार की स्थिति

रोजगार स्थिति	उत्तरदाता संख्या	प्रतिशत (%)
गृहिणी	60	40.0%
स्वरोजगार	25	16.7%
सरकारी नौकरी	20	13.3%
निजी क्षेत्र	30	20.0%
विद्यार्थी	15	10.0%
कुल	150	100%

उपर्युक्त तालिका सं0-03 में उत्तरदाताओं के रोजगार की स्थिति को दर्शाया गया है, सर्वाधिक उत्तरदाताओं 60(40%) एवं सबसे कम विद्यार्थी 15(10%) के उत्तरदाताओं है।

तालिका 4: सोशल मीडिया उपयोग की आवृ"िा

उपयोग की आवृत्ति	उत्तरदाता संख्या	प्रतिशत (%)
प्रतिदिन	90	60.0%
सप्ताह में कुछ बार	35	23.3%
कभी-कभी	20	13.3%
उपयोग नहीं करती	05	3.3%
कुल	150	100%

उपर्युक्त तालिका सं0-04 में सोशल मीडिया उपयोग की आवृति प्रस्तुत किया गया है। सर्वाधिक उत्तरदाताओं 90(60%) प्रतिदिन सोशल मीडिया का उपयोग करते है। सबसे कम 05(3.3%) उत्तरदाताओं सोशल मीडिया का उपयोग नहीं करते है।

तालिका: 5 सोशल मीडिया का प्रमुख उद्देश्य

उद्देश्य	उत्तरदाता संख्या	प्रतिशत (%)
जानकारी प्राप्त करना	45	30.0%
मनोरंजन	30	20.0%
सामाजिक संपर्क	50	33.3%
व्यावसायिक उपयोग	25	16.7%
कुल	150	100%

© 2026 चांदनी कुमारी, डॉ. कविता कुमारी वरीय. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

उपर्युक्त तालिका सं0-05 में सोशल मीडिया का प्रमुख उद्देश्य संबंधी विवरण प्रस्तुत किया गया है, सर्वाधिक उत्तरदाताओं सोशल मीडिया का उपयोग सामाजिक संपर्क 50(33.3%) के उद्देश्य से करते है, सबसे कम व्यवसायिक उपयोग 25(16.7%) के उद्देश्य से सोशल मीडिया का उपयोग करते है।

तालिका 6: सोशल मीडिया से जागरूकता में वृद्धि का अनुभव

प्रतिक्रिया	उत्तरदाता संख्या	प्रतिशत (%)
हाँ	110	73.3%
नहीं	40	26.7%
कुल	**150**	**100%**

उपर्युक्त तालिका सं0-06 में सोशल मीडिया से जागरूकता में वृद्धि का अनुभव में सर्वाधिक हाँ में 110(73.10%) उत्तरदाताओं जागरूकता में सोशल मीडिया का अनुभव करते है एवं 40(26.7%) सोशल मीडिया से जागरूकता का अनुभव नहीं करते है।

तालिका -07 शिक्षा के कारण आत्मनिर्भरता में वृद्धि

प्रतिक्रिया	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
हाँ	120	80.0%
नहीं	30	20.0%
कुल	**150**	**100%**

उपर्युक्त तालिका सं0-07 में शिक्षा के कारण आत्मनिर्भरता में वृद्धि में सर्वाधिक उत्तरदाताओं 120(80%) हाँ में जबाव दिये अर्थात् शिक्षा के कारण आत्मनिर्भरता में वृद्धि हुई है एवं 30(20%) उत्तरदाताओं मानते है कि शिक्षा से आत्मनिर्भरता में वृद्धि नहीं हुई है।

तालिका 8: राजनीतिक भागीदारी में सोशल मीडिया की भूमिका

प्रतिक्रिया	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
सकारात्मक प्रभाव	85	56.7%
कोई प्रभाव नहीं	50	33.3%
नकारात्मक प्रभाव	15	10.0%
कुल	**150**	**100%**

उपर्युक्त तालिका सं0-08 में राजनीतिक भागीदारी में सोशल मीडिया की भूमिका संबंधी विवरण प्रस्तुत किया गया है, सर्वाधिक उत्तरदाताओं 85(56.7%) में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है एवं 15(10%) पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

तालिका 9: सोशल मीडिया से प्रेरित होकर कोई सामाजिक कार्य में भागीदारी

प्रतिक्रिया	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
हाँ	65	43.3%
नहीं	85	56.7%
कुल	**150**	**100%**

उपर्युक्त तालिका सं0-09 में सोशल मीडिया से प्रेरित होकर कोई सामाजिक कार्य में भागीदारी संबंधी विवरण में सर्वाधिक 85(56.7%) उत्तरदाताओं नहीं में मत दिये है, अर्थात् सोशल मीडिया से सामाजिक कार्य में भागीदारी नहीं बढ़ी है।

तालिका 10: महिला संबंधित सरकारी योजनाओं की जानकारी का स्त्रोत

स्त्रोत	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
सोशल मीडिया	70	46.7%
समाचार पत्र	20	13.3%
टेलीविजन	30	20.0%
स्थानीय कार्यकर्ता	30	20.0%
कुल	**150**	**100%**

उपर्युक्त तालिका सं0-10 में महिला संबंधित सरकारी योजनाओं की जानकारी स्त्रोत संबंधी विवरण प्रस्तुत किया गया हैं। इसमें सोशल सर्वाधिक मीडिया से 70(46.6%) जानकारी मिली है, सबसे कम समाचार पत्र से 20(13.3%) जानकारी मिली है।

निष्कर्षः

यह अध्ययन स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि भागलपुर जिले में शिक्षा और सोशल मीडिया महिलाओं के सशक्तिकरण में निर्णायक भूमिका निभा रहे हैं। शिक्षा ने महिलाओं को आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और निर्णय लेने में सक्षम बनाया है, वहीं सोशल मीडिया ने उन्हें अभिव्यक्ति का सशक्त मंच प्रदान किया है। डिजिटल जागरूकता ने महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक भागीदारी को भी बढ़ावा दिया है। विशेष रूप से युवा और शिक्षित महिलाएं सामाजिक मुद्दों पर मुखर हो रही हैं और डिजिटल माध्यमों से अपने अधिकारों की जानकारी प्राप्त कर रही हैं। हालाँकि, सामाजिक रूढ़ियाँ, साइबर सुरक्षा की समस्याएं और डिजिटल संसाधनों की सीमित पहुँच अब भी सशक्तिकरण में बाधक हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षा और सोशल मीडिया का संयुक्त प्रभाव महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक सकारात्मक बदलाव ला रहा है, जिसे सशक्त नीतियों और योजनाओं द्वारा और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

सुझावः

भागलपुर जिले में महिला सशक्तिकरण को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक है कि ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षा को प्राथमिकता दी जाए तथा उन्हें डिजिटल साक्षरता प्रदान की जाए। महिलाओं को सोशल मीडिया के सुरक्षित एवं रचनात्मक उपयोग का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि वे आत्मविश्वास के साथ अपनी भागीदारी दर्ज कर सकें। साइबर अपराधों से सुरक्षा के लिए उन्हें कानूनी प्रावधानों की जानकारी होनी चाहिए। साथ ही, प्रशासनिक स्तर पर डिजिटल जागरूकता शिविर आयोजित किए जाने चाहिए। सोशल मीडिया पर महिला सशक्तिकरण से जुड़ी सकारात्मक और प्रेरक सामग्री को प्रोत्साहित करना भी आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. नेहरू, रवीन्द्र. (2012). महिला शिक्षा और सशक्तिकरण. नई दिल्लीः प्रकाशन भवन।
2. शर्मा, किरण. (2014). सोशल मीडिया और स्त्री विमर्श. जयपुरः राजस्थान पब्लिशर्स।
3. मिश्रा, संगीता. (2018). महिला सशक्तिकरणः एक सामाजिक परिप्रेक्ष्य. पटनाः ज्ञानदीप प्रकाशन।
4. कुमारी, प्रिया. (2019). सोशल मीडियाः नारी चेतना का नया मंच. वाराणसीः नारीवेद प्रकाशन।

© 2026 चांदनी कुमारी, डॉ. कविता कुमारी वरीय. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

5. सिंह, अर्चना. (2020). डिजिटल युग में महिलाओं की भूमिका. दिल्लीः भारत बुक हाउस।
6. यादव, पायल. (2020). आईसीटी और ग्रामीण महिलाएं. लखनऊः टेक्नो इंडिया पब्लिशर्स।
7. झा, मनोज. (2021). महिला सशक्तिकरण में मीडिया की भूमिका. नई दिल्लीः मीडिया प्रकाशन।
8. चैधरी, सीमा. (2022). नारी और नया मीडिया. मुंबईः समता बु9. क्स।
9. अली, सादिक. (2016). डिजिटल प्लेटफॉर्म और ग्रामीण महिलाएं. हैदराबादः समाज विमर्श प्रकाशन।
10. यूएन वुमेन. (2020). आईसीटी के माध्यम से महिला सशक्तिकरण. संयुक्त राष्ट्र प्रकाशन।

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Corresponding Author

चांदनी कुमारी समाजशास्त्र की शोध छात्रा हैं, जो भूपेंद्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार से संबद्ध हैं। उनका शोध सामाजिक संरचना, ग्रामीण विकास तथा समकालीन सामाजिक मुद्दों पर केंद्रित है। वे अकादमिक लेखन, शोध कार्य तथा सामाजिक विश्लेषण के माध्यम से ज्ञान के विकास में सक्रिय योगदान दे रही हैं।

© 2026 चांदनी कुमारी, डॉ. कविता कुमारी वरीय. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/